ईसाई धर्म

जिस ज़माने में फिलिस्तीन तथा जूडिया (वर्तमान इस्राइल) पर रोम का शासन था और आगस्टस सीज़र का प्रतिनिधि राजा हिरोड राज्य करता था, उस काल में यहूदियों पर बड़े अत्याचार होते थे। अनेक वर्षों से इस बात की चर्चा चल रही थी कि कोई मसीहा (दुखों को हरने वाला) पैदा होगा, वही यहूदियों का राजा बनेगा। यह बातें वहाँ के शासक को बहुत खटकती थीं। एक दिन पर्शिया से तीन व्यापारी अपनी धन-दौलत के साथ जूडिया आये तथा पूछने लगे कि मसीहा कहाँ पैदा हुआ है। जब शासक को व्यापारियों के विषय में मालूम हुआ तब उनको दरबार में बुलवाया गया तथा पूछा गया कि मसीहा के पैदा होने की क्या पहचान है? व्यापारियों ने कहा कि "हमने एक तारा देखा है, वह तारा जहाँ रुक जायेगा वहीं यहूदियों का राजा पैदा होगा।" राजा ने कहा "हमको खबर करना।" व्यापारी राजा की नीयत को समझ गये कि यह राजा उसको मार डालने की इच्छा रखता है। जब व्यापारियों ने वह स्थान देख लिया जहाँ तारा रुक गया था तो वह उस तबेले में, जहाँ जोज़ेफ बढ़ई की पत्नी ने बच्चे को जन्म दिया था, अपनी सारी दौलत छोड़ कर चुपके से, बिना शासक को बताये, पर्शिया वापस चले गये। जोज़ेफ की पत्नी का नाम मेरी था। उनके विषय में अनेक कथायें प्रचलित हैं। ईसामसीह का जब जन्म हुआ था तो मेरी विवाह से पूर्व कुवाँरी थीं। कुछ ईसाईयों का विश्वास है कि उनके गर्भ में पवित्र आत्मा ने प्रवेश करके बालक को जन्म दिया। कुछ का विश्वास है कि उनका विवाह होने के पश्चात गर्भ धारण किया गया तथा कुछ का मानना है कि वह जोज़ेफ के ही पुत्र थे। बेथेलहाम में जन्म होने के बाद जोज़ेफ अपनी पत्नी एवं पुत्र को लेकर, शासक के भय से, मिस्र चले गये। जब शासक हिरोड की मृत्यु हो गयी तो वे पुनः गैलिली प्रांत के नाज़ेरथ नगर में वापस आ गये।

12 वर्ष की आयु तक जीसस कुछ लिखना-पढ़ना सीख चुके थे। जब एक त्योहार के दिन सब लोग जेरूसलाम के मन्दिर जा रहे थे तो जीसस भी अपने पिता के साथ वहाँ गये। वहाँ की दशा देखकर कि मन्दिर में व्यापार आदि चल रहा था, बड़े दुखी मन से वापस लौटे। उसके बाद लगभग 18 वर्ष कहाँ रहे तथा क्या करते रहे किसी को कुछ पता नहीं। कुछ विद्वानों का मत है कि वह

भारत आये तथा बौद्ध धर्म के सिद्धांत अहिंसा को सीखा। परन्तु यह बात विवादास्पद है। इतना पता लगता है कि उनके पिता के देहान्त के पश्चात उनकी माता मेरी अपने पुत्र को लेकर अपने जन्म स्थान काना को चली गयीं तथा जीसस अपने पिता का बढ़ई का कार्य करके अपनी जीविका कमाने लगे। निश्चय रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता।

कुछ समय के पश्चात एक महात्मा जॉन उपदेश देने जूडिया आये तथा जार्डन नदी के किनारे बेथवारा पहुँचे। जॉन ने कुछ लोगों को नदी में डुबकी लगवाई तथा उपदेश दिया। उसी समय जीसस भी वहाँ पहुँच गये और उपदेश सुनने को उतावले हो गये। उन्होंने जॉन से कहा पहले मुझे पवित्र कीजिए तब उपदेश सुनूंगा। जॉन ने कहा "आप तो स्वयं पवित्र हो, आपको कौन पवित्र करेगा, आप तो सारे संसार को पवित्र करने आये हैं।" परन्तु जीसस के आग्रह करने पर जॉन ने जोर्डन के जल से उनको पवित्र किया।

इसके पश्चात जेरुसलाम का त्योहार फिर आया। अब की बार जीसस पूरी तरह तैयार होकर गये थे। वहाँ से पशुओं के झुण्ड को कोड़े मारकर हटाया। सिक्के बदलने वालों की मेज़ें उलट दीं और कहा कि पूजनीय स्थान को व्यापार से अपवित्र क्यों करते हो? इस बात पर मन्दिर के रब्बी (पुजारी) बहुत नाराज़ हुए। तत्पश्चात जीसस रेगिस्तान की ओर चले गये तथा वहाँ 40 दिन विचार मग्न रहकर फिर वापस आये।

लौटकर जीसस लोगों को धार्मिक ज्ञान देने लगे कि उनको किस प्रकार का जीवन बिताना चाहिए। धीरे-धीरे जीसस की मान्यता बढ़ने लगी। पास के गाँवों के लोग उनके धर्मोपदेश सुनने के लिये जमा होने लगे। यह उपदेश 'पहाड़ी के सन्देश' (सरमन आन दि माउण्ट) के नाम से प्रसिद्ध हुये।

उनके उपदेश निम्नलिखित थे :—

(1) निर्धन अच्छे हैं क्योंकि उनको स्वर्ग का राज्य मिलेगा।

(2) निर्बल अच्छे हैं जिनको पृथ्वी पर शक्ति मिलेगी।

(3) भूखे अच्छे हैं जिनको स्वर्ग में सब कुछ मिलेगा।

(4) दयावान अच्छे हैं जिनको ईश्वर की दया मिलेगी।

(5) सच्चे अच्छे हैं क्योंकि उनको ईश्वर मिलेगा।

(6) शान्त रहने वाले अच्छे हैं क्योंकि वह ईश्वर के पुत्र कहलायेंगे।

और मैं कहता हूँ —

(7) अपने भाई से बिना कारण नाराज मत होओ।

(8) बुराई को सहन करो, एक गाल पर थप्पड़ खाने पर दूसरा गाल भी दे दो।

Scanned by CamScanner

(9) अपने दुश्मनों से प्रेम करो तथा उनको दुआ दो जो तुमको बद्दुआ दे।

(10) उनके साथ अच्छा बर्ताव करो जो तुमसे बुरा बर्ताव करें।

(11) उनकी अच्छाई चाहो जो तुमको कष्ट दें।

(12) तुम लोगों को माफ़ करो, ईश्वर तुमको माफ़ करेगा।

(13) तुम दूसरों के साथ वही करो जो तुम दूसरों से आशा करते हो।

यहूदियों ने कानून सिखाया, जीसस ने प्रेम।

अपने अनुयायियों में से जीसस ने 12 शिष्यों (एपासिल्स) को चुना और यह प्रचार करने को कहा "लोगों से कहो, कि जिसके आने की तुमको आशा थी, कि कोई दुख हरने वाला मसीहा आयेगा, वह आ गया है।" जहाँ भी जीसस जाते वहीं बड़ी संख्या में लोग जमा हो जाते तथा उनके धर्मोपदेश को ध्यान से सुनते। इनके विचारों के प्रचार से पुजारी वर्ग घबरा गया। पुजारियों के पास कोई ऐसा आरोप न था जो रोमन शासन के सामने रखकर जीसस को दण्ड दिलवा सकते। मृत्यु दण्ड दो ही आरोपों पर मिल सकता था, एक तो रोमन देवताओं का अपमान करने पर तथा दूसरा रोमन राज्य के विरोध में जनता को भड़काने पर। पुजारियों ने आरोप लगाने के आशय से जीसस से पूछा कि ईश्वर की पहली आज्ञा क्या है। जीसस ने कहा, ईश्वर एक है तथा उसकी आज्ञा है कि तुम अपने पड़ोसी से वैसा ही प्रेम करोगे जैसा कि तुम अपने से करते हो। इससे बड़ी कोई आज्ञा नहीं।

लगभग तीन सालों के धर्मोपदेश से इनके अनेक अनुयायी हो गये परन्तु यहूदी, पुजारी-वर्ग इनका कट्टर विरोधी हो गया। हिरोड का पुत्र तथा गैलिली का गवर्नर हिरोड एण्टीपास तथा जेरुसलाम का गवर्नर पोण्टियास पिलेट, जीसस से बहुत नाराज थे और ऐसे अवसर की तलाश में रहते थे कि कोई ऐसा आरोप लगाया जाये जिससे जीसस को मृत्यु दण्ड मिल सके।

एक रात जीसस अपने मुख्य 12 शिष्यों (एपासिल्स) के साथ जब भोजन करने बैठे तो चेले इस बात पर लड़ने लगे कि उनमें से कौन जीसस का उत्तराधिकारी बनेगा। जीसस ने सबके पैर धोये और कहा कि तुम में से एक मुझसे धोखा करेगा और मुझे पकड़वा देगा। इस भोज का धार्मिक नाम 'अन्तिम सपर' रखा गया है। इसके बाद जीसस चले गये।

सरकारी रोमन सिपाही ताक में थे, उन्होंने जीसस को पकड़ लिया। उन पर रोम राज्य के विरोध करने का तथा जनता को भड़काने का आरोप लगाया गया। उस राज्य में एक रस्म ऐसी भी थी कि खाना खाने के पूर्व गवर्नर एक कैदी को छोड़ दिया करता था, जब गवर्नर ने पूछा कि किसको छोड़ा जाय तो कैदियों में दो जीसस थे एक धर्म प्रचार करने वाले जीसस तथा दूसरा जीसस

बार अब्बास था जिसने रोमन राज्य के विरोध में क्रांति का संदेश दिया था। पुजारियों ने साजिश करके उस जीसस अब्बास को छुड़वा दिया और इनको क्रॉस पर चढ़ाने का आदेश दे दिया गया। उधर बड़ई ने, जो बार अब्बास का कड़ा विरोधी था एक भारी क्रॉस बनाया था। उस समय के कानून के मुताबिक क्रॉस पर चढ़ने वाले को ही क्रास उठाकर अपने कंधों पर ले जाना पड़ता था, इस कारण वही भारी क्रास जीसस ही को अपने कंधों पर उठाना पड़ा। इस प्रकार प्रेम एवं अहिंसा का संदेश देने वाले को क्रॉस पर बड़ी बेरहमी से हाथों-पैरों में कीलें ठोंक कर तथा काँटों की टोपी पहनाकर क्रॉस पर लटका दिया गया।

जीसस के जीवन का अन्त कर देने वालों ने यह सोचा था कि उनके देहान्त के पश्चात् कोई उस धर्म का प्रचार करने की हिम्मत न करेगा परन्तु हुआ इसका उल्टा। अब जीसस के अनुयायी, उनको ईसा मसीह के नाम से प्रसिद्ध करने लगे तथा अपने को ईसाई कहने लगे। वे छिप-छिप कर धर्म प्रचार करने लगे, साथ ही साथ रोम राज्य के अत्याचारों को सहन करते गये। जहाँ भी रहते भूमिगत रहते। कुछ समय पश्चात् जीसस के चमत्कारों की कहानियों का भी प्रचार होने लगा कि उन्होंने किस प्रकार से अन्धों को आँखें दीं, कोढ़ियों तथा अन्य रोगियों को अच्छा कर दिया। किस प्रकार से पाँच रोटियों से पाँच हजार का पेट भर दिया, किस प्रकार से मृत्यु के तीसरे दिन ईश्वर द्वारा सशरीर स्वर्ग ले जाये गये। वे क़यामत के समय पुनः आयेंगे। धीरे-धीरे कुछ यहूदी भी ईसाई बनने लगे।

जीसस के धर्मोपदेश देश-परदेश में फैलने लगे। यहूदियों की धार्मिक पुस्तक का नाम अब 'पुराना धर्म' (ओल्ड टेस्टामेंट) पड़ गया तथा जीसस के उपदेशों का नाम 'नया धर्म' (न्यू टेस्टामेंट) पड़ गया। ईशु के उपदेशों को, शिष्यों ने एकत्रित करके, इसको लिखा, अपने नाम से, इस प्रकार कि जीसस ने यह कहा अर्थात जीसस के शब्दों को 'नये धर्म' में लिखा गया। 300 वर्षों तक ईसाई रोम-राज्य के अत्याचारों को सहते रहे। उनको जंगली जानवरों के सामने छोड़ा गया, जलाया गया तथा अनेक प्रकार से सताया गया। अन्त में 312 ई० सन् में रोम राज्य के सम्राट कान्सटैण्टाइन ने ईसाई धर्म को राज्य धर्म घोषित कर दिया। इसी सम्राट के नाम पर कान्सटैण्टीनोपिल (इस्तम्बोल—वर्तमान नाम) नगर बसाया गया, साथ ही साथ ईसाईयों पर होने वाले अत्याचारों का भी अन्त हो गया।

ईसाई धर्म का मुख्य प्रचारक सेण्ट पॉल को माना जाता है। वह टारसस (वर्तमान दक्षिणी तुर्की) का निवासी था। यहूदी धर्म का प्रचारक था तथा जीसस की आयु का था। जब ईसाई धर्म बढ़ने लगा तो यहूदियों ने पॉल को बुलाया और कहा "हमें ईसाई धर्म से बचाओ।" परन्तु रास्ते में ही उनका मन परिवर्तित

हो गया और वे ईसाई धर्म के सबसे बड़े प्रचारक बन गये। उनको रोमन साम्राज्य का स्वतन्त्र नागरिक माना जाता था, पूरे साम्राज्य में भ्रमण करने का अधिकार प्राप्त था। उन्होंने अपने विचारों के अनुसार बहुत सी अच्छी बातें जीसस की शिक्षा में जोड़ दीं और वे बातें सुनने वालों को बहुत अच्छी लगीं। उनके तथा जीसस के विचारों में निम्नलिखित अन्तर थे :-

(1) जीसस प्रेम बड़ा है, प्रेम से भय भागता है।
पॉल—प्रेम एवं भय दोनों बड़े हैं।

(2) जीसस—ईश्वर प्रेम है—पूर्ण प्रेम।
पॉल—ईश्वर प्रेम है परन्तु न्याय भी करता है।
न्याय करने वाला सजा भी देता है।

(3) जीसस—अपने में विश्वास रखो।
पाल—अपने में तथा जीसस में भी विश्वास रखो।

(4) जीसस—लोग बुरे नहीं हैं यदि उनके हृदय शुद्ध हों।
पॉल –लोग बुराई में घुंसे हैं, जो बचाने योग्य नहीं, परन्तु ईश्वर उनको बचा लेता है।

(5) जीसस—प्रेम से स्वयं विश्वास उत्पन्न हो सकता है।
पॉल—भय से स्वयं विश्वास उत्पन्न कराया जा सकता है।

(6) जीसस—स्वर्ग मनुष्य के अन्दर है।
पॉल—सुनो चमत्कार, हम मरेंगे नहीं, परन्तु हम सब बदल दिये जायेंगे।

पॉल बहुत विद्वान था, बड़ा प्रचारक था। उसने एक गिरजाघर भी रोम में बनवाया परन्तु रोम निवासियों ने उसको 25 वर्ष बाद मरवा दिया।

चौथी शताब्दी में तथा उसके बाद ईसाईयों के विचारों में अन्तर आने लगे और अनेक उपधर्मों में बट गये। लगभग 350 ई० सन् में कुछ समस्यायें खड़ी हुई। सर्वप्रथम ईसाई धर्म का प्रचार अरामायक और हेब्रू भाषा में हुआ करता था। अब क्योंकि यह धर्म रोम, यूनान तथा मिस्र में पहुंचा तो इसका अनुवाद वहां की भाषाओं में होने लगा और उन्हीं भाषाओं में प्रचार भी होने लगा जिसके कारण कुछ भिन्नता आने लगी। अन्तर आने की दूसरी समस्या तब आयी, जब कि समस्त धर्म गुरूओं (पोप्स) की सभा बुलायी गयी। यह सभा ईसाई धर्म में एकता पैदा करने के लिए बुलायी गयी थी परन्तु सैद्धान्तिक वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क के कारण अन्तर बढ़ गये और धर्म के अनुयायी विभाजित होने लगे। तीसरी समस्या थी प्रचारकों की, कि वे किस सिद्धांत के आधार पर प्रश्नकर्ताओं को समझाने का प्रयत्न करें—जीसस के शब्दों पर, पॉल के शब्दों पर,

चमत्कारों पर अथवा अंतःकरण की आवाज़ पर। जब इन बातों पर प्रचारकों में अन्तर पड़ने लगे तो समझने वालों में भी अन्तर पड़ने लगे। समझ कर विश्वास लाने वालों में अन्तर पड़ने लगे। इसके अतिरिक्त, नये धर्म के मानने वालों के अपने पिछले धर्म के संस्कार भी शामिल होने लगे जिसके कारण कुछ नए विचारों का जन्म होने लगा। नयी मान्यताओं एवं धारणाओं के सम्मिश्रण से कुछ नये प्रकार की धारणायें एवं मान्यतायें बनने लगीं और धर्म के मूल सिद्धांतों में तथा नये सिद्धान्तों में अन्तर पड़ने लगे। अनुयायी विभाजित होने लगे।

यह प्रश्न भी, कसौटी पर घिस कर, किस प्रकार माना जाय, कि ईश्वर, जीसस, पवित्र आत्मा, तीनों प्रथक हैं या एक हैं, क्या वे समान हैं या असमान हैं। जीसस ने तो ईश्वर को स्वर्ग का पिता बतलाया तथा प्रेम मुख्य बतलाया, परन्तु पाल ने ईश्वर को संसार का बनाने वाला, न्यायकर्त्ता, प्रेम करने वाला पिता तथा जीसस को उसका पुत्र माना। इसी प्रकार की शंकाओं ने बुद्धजीवियों के मन में अन्तर पैदा किये और यह अन्तर बिना किसी प्रमाण के कैसे सिद्ध हों। क्या ईश्वर ने जीसस के रूप में अवतार लिया, यदि जीसस भगवान नहीं थे, तो मनुष्य से भिन्न कैसे हुए। क्या दो ईश्वर थे—ईश्वर एवं जीसस। यदि दो थे तो एक बड़ा या एक छोटा था। क्या पिता बड़ा बेटा छोटा था। ऑरियस (256-336 ई० सन्) सिकन्द्रिया के गिर्जा का पादरी था, वह एक ही भगवान को मानता था। उसने कहा भगवान दो नहीं हो सकते, वह क्रॉस पर नहीं मारा जा सकता, वह जीसस एक अच्छा मनुष्य था। कुछ ने कहा ईश्वर एक है, उसके दो भाग हैं—पिता-पुत्र। बाद में यह मान लिया गया कि ईश्वर एक है उसके रूप तीन हैं—पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा।

सबसे पहले जुलाई 16, 1054 को ईसाई धर्म बँटा। इस समय तक 5 गिर्जाघर मुख्य थे। रोम के पादरी ने उपर्युक्त तिथि पर कॉन्सटैण्टाइन के पादरी को ऐनाथीमा (धर्म बाहर) कर दिया और उसी वर्ष की 24 जुलाई को कान्सटैण्टाइन के पादरी ने रोम के पादरी को धर्म बाहर कर दिया। इस प्रकार 587 से चले आ रहे अन्तरों के कारण धर्म दो भागों में बँट गया। रोम के पादरी को मानने वाले 'रोमन कैथोलिक' कहलाये—भाषा लैटिन थी तथा कान्सटैण्टाइन के पादरी को मानने वाले 'ग्रीक आर्थोडाक्स चर्च वाले' कहलाये—भाषा ग्रीक थी। इनमें यह अन्तर थे—

रोमन कैथोलिक	ग्रीक आर्थोडाक्स चर्च
1. महासभा करते और गुत्थियों को सुलझाते थे।	ऐसा नहीं करते थे।
2. विश्वास, चारित्रिक स्तर बदलते रहते थे।	नहीं बदलते थे।

1. **जिसूट्स का सम्प्रदाय** रोमन कैथोलिक धर्म की एक शाखा यह बनी, जिसको स्पेन के एक पादरी ने बनाया। इसका नाम था इग्नेशस आफ लोयला (जन्म 1491-मृत्यु 1556)। वह स्पेन के अलकाला विश्वविद्यालय का एक आचार्य था। विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने समझ लिया कि इस शिक्षक का प्रभाव स्नातकों पर अत्यधिक है। इसी ईर्ष्या-द्वेष के कारण उसको विश्वविद्यालय से निकाल दिया गया। उसने एक संस्था 'सोसायटी आफ जीसस' बनायी, जिसके सदस्य जिसूट्स कहलाये।

रोमन कैथोलिक धर्म में अधिक विभाजन नहीं हुए। इनके धर्म गुरुओं (पादरियों) को विवाह करने की अनुमति नहीं है। इनमें अलग-अलग पदवियाँ भी होती हैं। इनका मुख्यालय अब एक देश माना जाता है जिसको वैटिकन स्टेट तथा उसकी राजधानी को वैटिकन सिटी कहते हैं। यह देश सेण्टपीटर के महान तथा विशाल गिर्जाघर के चारों ओर एक दीवार बनाकर रोम नगर में, 1929 में निर्मित हुआ तथा इसकी जनसंख्या केवल एक हजार है।

2. **प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय**—जर्मनी के विटिंगबर्ग के गिर्जे के मुख्य पादरी मार्टिन लूथर (जन्म 1483-मृत्यु 1546) रोमन कैथोलिक चर्च से केवल इस लिए अलग हो गये कि पादरी 'लियो दसवें' को एक भव्य मकान बनाने के लिए धन की आवश्यकता थी और उन्होंने अपने अन्य पादरियों को क्षमा-पत्र (पाप क्षमा कराने के प्रमाण-पत्र) बेचने की आज्ञा प्रदान की। एक पादरी टेटज़ेल ने धन एकत्रित करने के लिए बड़ी सख्ती से काम लिया जिसके विरोध में मार्टिन लूथर ने उल्टा प्रचार किया। रोम के मुख्य पादरी ने इनको पादरी के पद से हटा दिया। तब इन्होंने बाइबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में किया। पादरी की ईश्वर एवं मनुष्य के मध्य की दलाली समाप्त की तथा घोषणा भी की और प्रचार भी किया "मनुष्य स्वयं अच्छे कर्म करके, प्रार्थना करके, बाइबिल पढ़कर अच्छा ईसाई बन सकता है। साथ ही साथ तीन बातों को मुख्य बताया—धार्मिक पुस्तक, व्यवहार, विश्वास।" यह मतानुयायी अपने गिर्जों में मूर्तियाँ स्थापित नहीं करते जब कि रोमन कैथोलिक अपने गिर्जाघरों (चर्च) में मूर्तियों की स्थापना करते हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे भारत में सनातनी एवं आर्य समाजी। कुछ समय बाद इनमें भी अलगाव आने लगे तथा कुछ शाखाओं में बँट गये।

3. **कैलविन सम्प्रदाय**—जॉन कैलविन (1509-1564) ने रोमन चर्च से टक्कर ली तथा स्वीट्जरलैण्ड में ऐलान किया कि केवल एक भगवान ही पूर्ण है जो मनुष्य को अच्छा बुरा बना सकता है। अपूर्ण मनुष्यों को क्या अधिकार है कि वे किसी पापी के कर्मों को क्षमा प्रदान करा दें। इसके लिए अच्छा यह है कि मनुष्य स्वयं से प्रश्न करे "क्या तुम ईश्वर का कोप सहन कर सकते हो ?" यदि उत्तर मिले "हाँ" तो तुम भगवान से चुन लिये गये। यदि सहन नहीं कर सकते तो तुम ईश्वर द्वारा दण्डित हो गये। लूथर के अनुयायी अपने विश्वास पर अटल रह कर पूछते थे, ईश्वर की बुद्धि तथा उसके कार्यकलापों पर वार्तालाप करते थे। भला अपूर्ण मनुष्य पूर्ण ईश्वर के विषय में क्या बात कर सकता है। आज विश्व में कैलविन धर्म के मानने वाले लगभग 4 करोड़ हैं। यह धर्म भी 125 भागों में, कुछ छोटे-मोटे अन्तरों के कारण विभाजित हो गया।

4. **प्रेसबोइटेरियन सम्प्रदाय**– कैलविन सम्प्रदाय कहता था चुनाव का सबको बराबर का हक होता है क्योंकि ईश्वर की नज़र में सब बराबर हैं। इस धर्म के मानने वाले बड़े लोगों को चुनने के पक्ष में थे इस कारण अलग हो गये। इनकी संख्या अमेरिका में लगभग 40 लाख है।

5. **ऐंग्लीकन सम्प्रदाय**—इंगलैंड के महाराजा हेनरी अष्टम के राज्य काल में, विवाह के कारण, यहाँ के पादरी ने रोम से सम्बन्ध तोड़ दिया और अपने पादरियों को विवाह करने की अनुमति दे दी। इसी कारण बाइबिल, लैटिन के स्थान पर, अंग्रेजी में अनुवाद करके लिख दी गई तथा चर्च से मूर्तियाँ भी हटा दी गयीं। 1559 में जनसाधारण के लिए अंग्रेजी में 'ईश्वर प्रार्थना' पार्लियामेण्ट ने छाप कर बंटवा दी। इसके मानने वालों को ऐंग्लीकन्स कहते हैं।

6. **कॉंग्रीगेशनल सम्प्रदाय**—कुछ इंगलैण्ड निवासी ऐंग्लीकन सम्प्रदाय, जो कानून द्वारा बनाया गया था, से नाराज हो गये। ऐसे लोग पहले तो हालैण्ड में मिले तथा बाद में 1620 में 'मेफ्लावर' नाम के जहाज में बैठ कर एक नये देश (अमेरिका) को चले गये। उनकी संख्या केवल 102 थी। बाद में भी कुछ लोग गये। यह सब पुरीतन्स कहलाये। अमेरिका में पादरियों की बहुत शक्ति थी। यहाँ तक लिखा गया है "रविवार की धर्म आज्ञा, सोमवार को राजाज्ञा बन जाती थी।" इन लोगों ने बड़े-बड़े कालेज स्थापित किये। 1961 में अमेरिका के सारे चर्च एकजुट हो गये और उनका नाम "युनाइटेट चर्च आफ़ क्राइस्ट" रखा गया।

7. **मेथॉडिस्ट सम्प्रदाय**—जॉन वेज़ली (1703-1791) ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय का एक छात्र था। वह ऐंग्लीकन सम्प्रदाय का सदस्य था। जिस शिष्टाचारिक पद्धति से सम्प्रदाय की प्रार्थना पुस्तक गिरजाघरों में पढ़ी जाती थी

वह उसको अच्छा नहीं लगा। वह उसमें कुछ भावुकता लाना चाहता था ताकि लोग धार्मिक व्याख्यान में ईश्वर को उपस्थित समझें तथा उसका प्रेम अपने हृदय में प्रतीत करें। इस कारण उसने अपने कुछ मित्रों की सभा बनाई जो बाइबिल को एक तरीके (मेथड) से अध्ययन करते थे। अपने कमरों में ही वे ईश्वर की प्रार्थना करने लगे। अन्य स्थानों के लोगों को भी यह लोग प्रेमभाव के मैथड को समझाने लगे। लोगों को उसमें आनन्द आने लगा। कुछ दिनों के बाद इसके अलग गिर्जाघर बनने लगे। अमेरिका में इसका बहुत प्रचार हुआ। बहुत से सामाजिक तथा शिक्षा सम्बन्धी कार्य किये जाने लगे। इनकी संख्या तीन करोड़ से भी अधिक हो गई। परन्तु धीरे-धीरे इन लोगों में भी विभाजन होने लगे तथा 20 शाखायें बन गयीं। इनमें अधिक अन्तर नहीं था।

8. **कोयकर सम्प्रदाय**– जॉर्ज फ़ाक्स (1624-1692) ने इस बात पर बल दिया कि धर्म के कड़े सिद्धांत नहीं होना चाहिये। कोई गिर्जाघर न हो, किसी प्रकार की प्रार्थनायें न हों, ईश्वर तो अन्तर्मन से प्रतीत करने की तथा अनुभव करने की चीज है। ईश्वर स्वयं अपने अच्छे कर्म करने वालों से तथा विचारशील मनुष्यों से बात करता है। इस कारण न धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने की न अमुक दिन ही मिलकर प्रार्थना करने की तथा न प्रार्थना गाने की आवश्यकता है। ध्यान में मग्न रहने से ईश्वर स्वयं अंत:करण में प्रकाश उत्पन्न करेगा। इन लोगों की सभाओ में गाने नहीं गाये जाते, धार्मिक व्याख्यान नही होते, वे केवल ध्यान में बैठ जाते हैं। यदि किसी को कोई शंका होती है तो वह प्रश्न पूछ लेता है, अन्य ध्यान में बैठे रहते हैं। यदि उस शंका का समाधान करने के लिए कोई सदस्य तैयार हो गया तो उत्तर दे देता है। इनकी संख्या सारे विश्व में लगभग एक लाख नव्बे हज़ार है जो अधिकतर अमेरिका में रहते हैं।

9. **युनिटेरियन सम्प्रदाय**—16वीं शताब्दी में कुछ पादरियों ने ईश्वर के तीन रूप (पिता, पुत्र तथा पवित्र आत्मा) मानने से इन्कार कर दिया परन्तु उन्होंने ईश्वर के एकत्व (यूनिटी) से इन्कार नहीं किया, इसी कारण यह लोग युनिटेरियन कहलाये। अमेरिका में जॉज़ेफ़ प्रीस्तली ने 1794 में एक चर्च बनवाया। बाद में इस सम्प्रदाय के अनेक अनुयायी हो गये तथा कुछ लोग तो इतने आगे बढ़े कि जीसस को भी ईश्वर का पुत्र मानने के बजाय एक सच्चा चारित्रिक पुरुष मानने लगे और बाइबिल को मानव-निर्मित पुस्तक मानने लगे। इनकी संख्या लगभग दो लाख है तथा 679 गिर्जाघर हैं।

10. **युनिवर्सेलिस्ट सम्प्रदाय**–युनिटेरियन सम्प्रदाय से कुछ लोग अलग होकर मानने लगे कि ईश्वर इतना अच्छा है कि वह किसी को सजा नहीं देता। यह लोग युनिवर्सेलिस्ट कहलाये। यह मानता है कि मनुष्य स्वयं इतना अच्छा है या इतना अच्छा बन सकता है कि ईश्वर उसको दण्ड नहीं देता।

11. **बैपटिस्ट सम्प्रदाय**—इसके प्रवर्तक जॉन स्मिथ थे। इसके मानने वाले पापों का नाश करने के लिये पानी में पूरा गोता मारते हैं। यह लोग पानी छिड़कने में विश्वास नहीं करते। इनका पहला गिर्जाघर इंगलैण्ड में 1612 में बना। विश्व में इनकी संख्या लगभग चार करोड़ है।

12. **क्रिश्चियन साइन्स सम्प्रदाय**—मेरी बेकर एड्डी (1821-1910) ने अपनी आयु के 40वें वर्ष में कुछ मानसिक विश्वासों तथा रोगों के मानसिक उपचार का अनुभव प्राप्त किया। 1857 में उन्होंने एक पुस्तक छापी, जिसमें उन्होंने यह सिद्ध किया कि ईश्वर एक आत्मा है, एक शक्ति है और भौतिक वस्तुयें झूठी हैं, पापों एवं कष्टों की जड़ हैं। बुरे विचारों से, जो मन को घेर लेते हैं या घर बना लेते हैं, रोगों से, डर से तथा नफ़रत से दूर रहने का तरीका यह है कि भगवान में लीन होकर आराधना की जाये। इसका पहला चर्च बोस्टन-अमेरिका में 1906 में बना। आज 45 देशों में इसकी 3 हजार शाखायें हैं। यह लोग कयामत के दिन (डे आफ़ जजमेण्ट) उठाये जाने के विश्वास को नहीं मानते।

आज ईसाई धर्म के इतने सम्प्रदाय हैं कि इनकी गणना करना असम्भव है। उनकी सदस्यता भी बहुत कम है। ईसाइयों ने अपने धर्म का बहुत प्रचार किया। संसार के पिछड़े वर्ग के उपेक्षित लोगों में ईसाई धर्म का प्रचार किया। उनको ईसाई जरूर बनाया परन्तु उनका शैक्षिक स्तर, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर भी ऊँचा किया। जो लोग अभी तक शोषित होते थे वे अब शोषण करने में सक्षम होने लगे।

ईसाइयों में सेवा भाव भी अन्य धर्मों के मुकाबले अधिक पाया जाता है। पाश्चात्य देशों के लोगों में मैंने अपनी विश्व यात्रा के दौरान यह भी देखा कि वहाँ के लोग अधिकतर अपने कमाये धन को अपने बच्चों के नाम नहीं कर जाते अपितु वे धार्मिक संस्था को दे जाते हैं। इस धन से वे धार्मिक संस्थायें स्कूल, अनाथालय, बुजुर्गों के लिए घर तथा अस्पताल आदि चलाते हैं, खासतौर पर उन देशों में जो अविकसित हैं, गरीब हैं तथा सभ्यता से दूर हैं।

आरम्भ काल में रोमन कैथोलिक चर्च के अधिकारियों ने अपने पोप्स के निवास स्थानों की सम्पन्नता के लिए, लोगों को माफीनामे (पापों के क्षमा दान-पत्र) तथा स्वर्ग भेजने के लिए पासपोर्ट (इण्डलजेन्सेज़), जबरदस्ती लोगों को बेच कर उनसे खूब धन इकट्ठा किया। कोर्टेज़ एवं अन्य स्पेन निवासी ईसाईयों ने अमेरिका के ऐज़टेक एवं माय की रेड इण्डियन जातियों को खूब लूटा और उनका निर्दयता से वध किया। कब ? छठी शताब्दी में, परन्तु जैसे-जैसे शिक्षा तथा ज्ञान का प्रसार हुआ वैसे अत्याचार भी होते गये।

—x—